मूलवण्णो

(मूलवर्ण)

आचार्य वसुनन्दी मुनि

ग्रंथ	:	मूलवण्णो (मूलवर्ण)
मंगल आशीर्वाद	:	परम पूज्य श्वेतपिच्छाचार्य श्री 108 विद्यानन्द जी मुनिराज
ग्रंथकार	:	आचार्य श्री 108 वसुनन्दी जी मुनिराज
संपादन	:	आर्यिका वर्धस्वनंदनी
प्राप्ति स्थान	:	• श्री जम्बूस्वामी तपोस्थली, बोलखेड़ा (कामां) राजस्थान
संस्करण	:	प्रथम 1000 (सन् 2021)
प्रकाशक	:	निर्ग्रंथ ग्रंथमाला समिति (पंजी.)
मुद्रक	:	पारस प्रकाशन, दिल्ली मो.: 9811374961, 9818394651, 9811363613 pkjainparas@gmail.com, kavijain1982@gmail.com

संपादकीय

ज्ञानाद्धितं वेत्ति ततः प्रवृत्तिं, रत्नत्रये संचित कर्म मोक्षः।
ततस्ततः सौख्यमबाध मुच्चैस्तेनात्रयत्नं विदधाति दक्षः॥

मनुष्य ज्ञान से हित को जानता है, हित का ज्ञान होने से रत्नत्रय में प्रवृत्ति करता है, रत्नत्रय में प्रवृत्ति करने से संचित कर्मों से मोक्ष होता है और संचित कर्मों के मोक्ष से निर्बाध उत्तम सुख की प्राप्ति होती है, इसलिये चतुर मनुष्य ज्ञान में प्रयत्न करते हैं।

भव्य-नराः ज्ञानरथाधिरूढाः, व्रजन्ति शीघ्रं शिवपत्तनञ्च।
अज्ञानिनो मौढ्यरथाधिरूढाः, व्रजन्ति श्वभ्राभिधपत्तनं वै॥

ज्ञान रूपी रथ पर सवार हुए भव्य जीव शीघ्र मोक्षरूपी नगर को प्राप्त होते हैं और मूर्खतारूपी रथ पर सवार हुए अज्ञानी जीव निश्चय से नरकरूपी नगर को प्राप्त होते हैं।

चेतना के क्षितिज पर उदीयमान सम्यग्ज्ञान का आदित्य अज्ञान रूपी तम को तिरोहित कर वस्तु का सम्यक् अवबोध कराने में समर्थ होता है और सम्यग्ज्ञान का यह मिहिर श्रुताभ्यास स्वाध्याय से तेजस्विता को प्राप्त होता है। "सम्यग्ज्ञान का वह सूर्य कषायों का अवशोषण, भोग रूपी कीटाणुओं का नाश, सम्यगावबोध का प्रकाश फैलाता है।" स्वाध्याय में निरत व्यक्ति के लिये मोक्ष रूपी दुर्ग तक पहुँचने में बाधक संसार का यह दुर्गम व दुर्लंघ्य सा प्रतीत होने वाला गिरी राईवत् हो जाता है जिससे मोक्ष यात्रा सरल व सुगम हो जाती है।

अतः भव्य जीवों के हितार्थ आचार्य श्री ने मूलभाषा प्राकृत में ग्रंथों का लेखन किया, जिससे भाषा को जीवंतता भी प्राप्त हो और सद्साहित्य के आलोक से संपूर्ण विश्व प्रकाशित हो सके।

मूलाक्षरों का प्रतिपादन करने वाला यह ग्रंथ 84 गाथाओं में अनुबद्ध है। वर्णों की परम्परा अनादि सिद्ध है। भावों को प्रेषित करने में वर्ण, शब्द ही सहायक होते हैं। ये अक्षर, शब्दादि यद्यपि पुद्गल हैं किन्तु प्रत्येक पुद्गल का प्रभाव, शक्ति आदि भिन्न-भिन्न है। शब्दों-वर्णों की भी अपनी शक्ति है। 'रं' अक्षर के ध्यान उच्चारण से जहाँ शीत बाधा दूर होती है तो 'पं' अक्षर ऊष्णता का निरोधक है। गुरु जी कई बार वर्ण शक्ति को बता कर विभिन्न व्यक्तियों की प्रकृति आदि के अनुसार विभिन्न मंत्रादि का महत्त्व समझाते हैं। जिसका चित्त चंचल हो तो उसके लिये पृथ्वी संज्ञक वर्णों का समावेश किया जाता है। इस प्रकार शब्दों का प्रभाव व्यक्तियों पर पड़ता है। उन सभी वर्णों की शक्ति व प्रभाव को ग्रंथकार ने ग्रंथ में प्रतिपादित किया है। 33 व्यंजन, 27 स्वर व 4 योगवाह इस प्रकार ये 64 वर्ण होते हैं। ग्रंथकार ने स्वयं निरूपित किया है।

चदु-जोगवाह-तित्तिस-वंजणेहि सह वण्णा चउसट्ठी।
सत्तावीस-सरा वा, होंति उच्चारणादो सया॥17॥

उच्चारण की अपेक्षा सत्ताईस स्वर (27) होते हैं, चार योगवाह व तैंतीस व्यंजनों (33) के साथ वर्ण चौंसठ (64) होते हैं।

यदि इस ग्रंथ के संपादन में कोई त्रुटि रह गई हो तो विज्ञजन संशोधित कर पढ़ें, हंसवत् गुणग्राही दृष्टि से ग्रंथाध्ययन करें। जन-जन के श्रद्धापुंज परम पूज्य अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी आचार्य गुरुवर श्री वसुनंदी जी मुनिराज का संयम, तप, ज्ञान, साधना का सौरभ सहस्रों वर्षों तक संपूर्ण विश्व को सुरभित करता रहे। गुरुवर श्री को आरोग्य लाभ हो एवं अपने लक्ष्य को शीघ्र प्राप्त करें। परम पूज्य गुरुवर श्री

के चरणों में सिद्ध-श्रुत-आचार्य भक्ति सहित कोटिशः नमोस्तु! नमोस्तु! नमोस्तु!.....।।

''जैनम् जयतु शासनम्''

श्री शुभमिति माघ शुक्ल दशमी
श्री वीर निर्वाण संवत् 2547
सोमवार 22.2.2021
श्री जम्बूस्वामी तपोस्थली-बौलखेड़ा,
कामां, भरतपुर (राज.)

आर्यिका वर्धस्वनंदनी

अनुक्रमणिका

मंगलाचरण 11
ग्रंथ प्रतिज्ञा 11
अनादिकालीन वर्ण 12
अक्षर हैं अक्षर 12
वर्ण शक्ति 12
वर्ण हैं कारण 13
श्रुतज्ञान 13
मूलवर्ण–श्रुत का मूल 13
वर्ण बिना भक्ति नहीं 14
वर्ण संख्या 14
स्वर–व्यंजन संख्या 14
स्वर 15
64 वर्ण 15
कैसे होते हैं 27 स्वर 16
योगवाह 16
संज्ञानुसार फल 16
'अ' से 'ह' तक वर्णों का प्रभाव 17
वर्ण माहात्म्य 31
प्राकृत भाषा 31
ग्रंथकार की लघुता 32
अंतिम मंगलाचारण 32
प्रशस्ति 34

मूलवण्णो

(मूलवर्ण)

शब्द भावों की अभिव्यक्ति का कारण हैं। वर्णों से शब्द, शब्द से पद व पदों से वाक्यों का निर्माण होता है। ये वर्ण मूलतः चौसठ हैं, इन 64 वर्णों व वर्ण की पृथक्-पृथक् शक्तियों का कथन करने वाला यह अद्भुत ग्रंथ है।

मूलवण्णो
(मूलवर्ण)

मंगलाचरण

अरिहा सिद्धाइरिया, पाढग-साहू जिणधम्मागमा य।
किट्टिमाकिट्टिमाणि य, वंदे जिण-चेइय-भवणाणि।।1।।

अन्वयार्थ-अरिहा-अरिहंत **सिद्धा**-सिद्ध **आइरिया**-आचार्य **पाढगा**-पाठक (उपाध्याय) **साहू**-साधु **जिणधम्मागमा**-जिनधर्म, जिनागम **य**-और **किट्टिमाकिट्टिमाणि**-कृत्रिमाकृत्रिम **जिण-चेइय-भवणाणि य**-जिन चैत्य और जिन भवन (जिन चैत्यालयों) की **वंदे**-वंदना करता हूँ।

जिणा उसहदेवादी, उसहसेणादी गणहरा सव्वा।
सव्वा सुदकेवलिणो, पणमामि धरसेणाइ-मुणी।।2।।

अन्वयार्थ-उसहदेवादी-श्री वृषभदेव आदि **सव्वा**-सभी **जिणा**-जिन **उसहसेणादी**-वृषभसेनादि सभी **गणहरा**-गणधर **सव्वा**-सभी **सुदकेवलिणो**-श्रुतकेवलियों व **धरसेणाइ-मुणी**-धरसेनादि मुनियों को मैं (आचार्य वसुनंदी) **पणमामि**-नमस्कार करता हूँ।

ग्रंथ प्रतिज्ञा

अक्खरक्खरो णिच्चं, कस्स वि कालम्मि णो खयंते ते।
मूलवण्णं भणामि, सुदणाणमसक्कं विणा जं।।3।।

अन्वयार्थ-अक्खरक्खरो णिच्चं-अक्षर नित्य अक्षर (क्षय रहित) हैं **ते**-वे **कस्सवि**-किसी भी **कालम्मि**-काल में **णो खयंते**-नष्ट नहीं होते। **जं**-जिसके **विणा**-बिना **सुदणाणं**-श्रुतज्ञान **असक्कं**-अशक्य है, (उस) **मूलवण्णं**-मूलवर्ण (ग्रंथ) को **भणामि**-कहता हूँ।

अनादिकालीन वर्ण

सहावेण वण्णाणं, सत्ता सिद्धा अणाइयालादो।
णेव अस्सुप्पादगो, को वि वण्णा अपोरिसीया।।4।।

अन्वयार्थ-अणाइयालादो-अनादिकाल से **सहावेण**-स्वभाव से **वण्णाणं**-वर्णों की **सत्ता**-सत्ता **सिद्धा**-सिद्ध है, **को वि**-कोई भी **अस्स**-इसका **उप्पादगो**-उत्पादक **णेव**-नहीं है **वण्णा**-वर्ण **अपोरिसीया**-अपौरुषेय हैं।

पइडी अपोरिसीया, भणिदा सहावेण तहा सहावो।
तक्क-अगोयरो सया, मूलवण्णो अणादि-सिद्धो।।5।।

अन्वयार्थ-सहावेण-स्वभाव से **पइडी**-प्रकृति **अपोरिसीया**-अपौरुषेय **भणिदा**-कही गई है **तहा**-तथा **सहावो**-स्वभाव **सया**-सदा **तक्क-अगोयरो**-तर्क के अगोचर है **मूलवण्णो**-मूलवर्ण **अणादि-सिद्धो**-अनादि से सिद्ध हैं।

अक्षर हैं अक्षर

अक्खर-अक्खरमूलं, अक्खरणाणं खलु केवलणाणं।
तं ण कया विणस्सदे, मूलवण्णो अक्खररूवो।।6।।

अन्वयार्थ-अक्खर-अक्षर **अक्खरमूलं**-अक्षर (क्षय रहित अवस्था) का मूल है **केवलणाणं**-केवलज्ञान **खलु**-निश्चय से **अक्खरणाणं**-अक्षरज्ञान है **तं**-वह **कया**-कभी **ण विणस्सदे**-विनष्ट नहीं होता **मूलवण्णो**-मूलवर्ण **अक्खररूवो**-अक्षररूप हैं।

वर्ण शक्ति

वण्णेहि अप्पलाहं, गहेदुं सक्को दुल्लहो जो सो।
सया पत्तेय-वण्णो, तियाले हवेदि सत्ति-जुदो।।7।।

अन्वयार्थ-पत्तेय-वण्णो-प्रत्येक वर्ण **तियाले**-तीनों कालों में **सया**-सदा **सत्ति-जुदो**-शक्ति से युक्त **हवेदि**-होता है (इसीलिए) **जो**-जो **वण्णोहि**-वर्णों के द्वारा **अप्पलाहं**-आत्मलाभ **गहेदुं**-ग्रहण करने में **सक्को**-समर्थ है **सो**-वह (पुरुष) **दुल्लहो**-दुर्लभ है।

वर्ण हैं कारण

होंति णिमित्तं वण्णा, उवसम-खओवसम-खय-भावाणं।
सुदणाण-संजम-भत्ति-वेरग्ग-तव-झाण-हेदू वि।।8।।

अन्वयार्थ-वण्णा-वर्ण **उवसम-खओवसम-खय-भावाणं**-उपशम, क्षयोपशम, क्षय भावों के **णिमित्तं**-निमित्त **होंति**-होते हैं **सुदणाण-संजम-भत्ति-वेरग्ग-तव-झाण-हेदू वि**-श्रुतज्ञान, संयम, भक्ति, वैराग्य, तप व ध्यान का भी कारण हैं।

श्रुतज्ञान

सव्वहिदं करिदुं णो, कं वि समत्थं विणा हु सुदणाणं।
तं होदि सुदणाणं, सत्थ-परत्थ-रूवं तहा हि।।9।।

अन्वयार्थ-सुदणाणं-श्रुतज्ञान **हि**-ही **सत्थ-परत्थ-रूवं-तहा**-स्वार्थ तथा परार्थ रूप **होदि**-होता है **तं**-इसीलिए **हु**-निश्चय से **सुदणाणं**-श्रुतज्ञान के **विणा**-बिना **कं वि**-कोई भी ज्ञान **सव्वहिदं**-सर्वहित **करिदुं**-करने में **णो समत्थं**-समर्थ नहीं है।

मूलवर्ण—श्रुत का मूल

मूलोव्व मूल-वण्णो, विणा मूल-मसक्का पुप्फ-चूला।
सुदणाणस्स मूलो, अणादीदो मूलवण्णो हु।।10।।

अन्वयार्थ-मूल-वण्णो-मूल वर्ण **मूलोव्व**-मूल के समान हैं **मूलं**-

मूल के **विणा**-बिना **पुप्फ-चूला**-फूल और चूल **असक्का**-अशक्य है। **मूलवण्णो**-मूलवर्ण **हु**-ही **अणादीदो**-अनादि से **सुदणाणस्स**-श्रुतज्ञान का **मूलो**-मूल है।

वर्ण बिना भक्ति नहीं

वण्णेहि लिहिज्जंते, मंतो थुदी वंदणा पूयादी।
जो कम्मक्खयिदुं सो, सक्को संजोजदि भावेहि।।11।।

अन्वयार्थ-वण्णेहि-वर्णों से **मंतो**-मंत्र **थुदी**-स्तुति **वंदणा**-वंदना **पूयादि**-पूजा आदि **लिहिज्जंति**-लिखी जाती है **जो**-जो **भावेहि**-भावों के द्वारा (वर्णों का) **संजोजदि**-संयोजन करता है **सो**-वह **कम्मक्खयिदुं**-कर्मों का क्षय करने में **सक्को**-समर्थ होता है।

वर्ण संख्या

चउसट्ठी सव्व-मूल-वण्णाकारादीदु हगारंतं।
बे-ति-चदु-भंगादीदु, संखेज्जसंखेज्ज-पमाणं।।12।।

अन्वयार्थ-अकारादीदु-अकार को आदि लेकर **हगारंतं**-हकार पर्यंत **सव्व-मूल-वण्णा**-सर्व मूल वर्ण **चउसट्ठी**-चौंसठ होते हैं, **बे-ति-चदु-भंगादीदु**-दो, तीन, चार भंगादि की अपेक्षा **संखेज्जसंखेज्ज-पमाणं**-संख्यात, असंख्यात प्रमाण हैं।

स्वर-व्यंजन संख्या

पाहण्णेण चोद्दसा, सरा ओयारंतमगारादीदु।
कगारादि-वंजणाणि, तित्तीसं मुणेदव्वाइं।।13।।

अन्वयार्थ-पाहण्णेण-प्रधानता से **अगारादीदु**-अकारादि से **ओयारंतं**-ओकार पर्यंत **चोद्दसा**-चौदह **सरा**-स्वर[1] **कगारादि-वंजणाणि**-**तित्तीसं**-ककार आदि तैंतीस व्यंजन **मुणेदव्वाइं**-जानने चाहिए।

---

1. तत्र चतुर्दशादौ स्वराः। (कातंत्र)

कचटतप-पंचवग्गा, पण-पणक्खराण होज्ज णियमेणं।
सेसट्ठक्खरा वि तह, सरहीण-तित्तिस-वंजणाणि।।14।।

अन्वयार्थ-पण-पणक्खराण-पाँच-पाँच अक्षरों के **णियमेण**-नियम से **कचटतप-पंचवग्गा**-क, च, ट, त, प ये पाँच वर्ग **होज्ज**-होते हैं **तह**-तथा **सेसट्ठक्खरा**-शेष आठ अक्षर **वि**-भी (होते हैं, इस प्रकार) **सरहीण-तित्तिस-वंजणाणि**-स्वर से हीन तैंतीस व्यंजन होते हैं।

सर-उच्चारणत्थं हु, होज्ज वण्णा सत्तचत्तालीसं।
सरं विणा वंजणाणि, अद्धक्खरोव्व सया मण्णे।।15।।

अन्वयार्थ-14 स्वर, 33 व्यंजन इस प्रकार **सत्तचत्तालीसं**-47 **वण्णा**-वर्ण **होज्ज**-होते हैं। **हु**-निश्चय से **सर-उच्चारणत्थं**-स्वर उच्चारण के लिए होते हैं **सरं विणा**-स्वर के बिना **वंजणाणि**-व्यंजन **सया**-सदा **अद्धक्खरोव्व**-आधे अक्षर के समान **मण्णे**-माने जाते हैं।

स्वर

सयं रायंति णिच्चं, जे ते सरा भणिदा सुणाणीहिं।
जाण बहु-सत्ति-जुदाणि, सर-लेव-विहीण-वंजणाणि।।16।।

अन्वयार्थ-जे-जो **णिच्चं**-नित्य **सयं**-स्वयं **रायंति**-राजते हैं **ते**-वे **सुणाणीहिं**-सुज्ञानियों के द्वारा **सरा**-स्वर **भणिदा**-कहे गए हैं। **बहु-सत्ति-जुदाणि**-बहुत शक्ति से युक्त **सर-लेव-विहीण-वंजणाणि**-स्वर लेप से विहीन व्यंजन **जाण**-जानो।

64 वर्ण

चदु-जोगवाह-तित्तिस-वंजणेहि सह वण्णा चउसट्ठी।
सत्तावीस-सरा वा, होंति उच्चारणादो सया।।17।।

अन्वयार्थ-**वा**-अथवा **उच्चारणादो**-उच्चारण की अपेक्षा से **सया**-सदा **सत्तावीस-सरा**-सत्ताईस स्वर **होंति**-होते हैं (27 स्वर) **चदु-जोगवाह-तित्तिस-वंजणेहि सह**-चार योगवाह, 33 व्यंजनों के साथ **वण्णा**-वर्ण **चउसट्ठी**-64 होते हैं।

कैसे होते हैं 27 स्वर

लहु-दीह-पिलुदादो य, सराण जहण्ण-मज्झुक्किट्ठ-धणी।
होज्ज हु सत्तावीसं, ताण फलाणि दिस्संति पुढं।।18।।

अन्वयार्थ-**लहु-दीह-पिलुदादो य**-लघु, दीर्घ व प्लुत की अपेक्षा से **सराण**-स्वरों की **जहण्ण-मज्झुक्किट्ठ-धणी**-जघन्य, मध्यम व उत्कृष्ट ध्वनि **होज्ज**-होती है (ये स्वर) **सत्तावीसं**-27 होते हैं **हु**-निश्चय से **ताण**-उनका **फलाणि**-फल भी **पुढं**-पृथक् **दिस्संति**-दिखाई देता है।

योगवाह

उवम्माणीय-जीहामूलीय-विसग्गणुस्सारा तहा।
चदुविहो जोगवाहो, जाणिदव्वो सया णाणीहि।।19।।

अन्वयार्थ-**उवम्माणीय-जीहामूलीय-विसग्गणुस्सारा तहा**-उपध्मानीय, जिह्वामूलीय, विसर्ग तथा अनुस्वार **जोगवाहो**-योगवाह **सया**-सदा **चदुविहो**-चार प्रकार का **णाणीहि**-ज्ञानियों को **जाणिदव्वो**-जानना चाहिए।

संज्ञानुसार फल

चदु-उण्हो अंतत्थो, पणाणुणासिगो घोसाघोसा य।
मिदु-रुक्खाइ-अक्खरा, जह सण्णा फलदायगा तह।।20।।

अन्वयार्थ-चदु-उण्हो-चार ऊष्ण **अंतत्थो**-चार अंतस्थ **पणाणुणासिगो**-पाँच अनुनासिक **घोसाघोसा**-घोष, अघोष **मिदु-रुक्खाइ-अक्खरा य**-मृदु और रुक्ष आदि अक्षर होते हैं **जह**-जैसी **सण्णा**-संज्ञा है **तह**-वैसे **फलदायगा**-फलदायक होते हैं।

'अ' से 'ह' तक वर्णों का प्रभाव

'अ'-गार-अव्वय-वावी, अप्प-एगत्त-सूअगो हु सुद्धो।
णाणरूव-सत्तिपुंज-बुद्धो पणव-बीअ-पाणो य।।21।।

अन्वयार्थ-अगारो-'अ'कार **हु**-निश्चय से **अव्वय-वावी**-अव्यय, व्यापी **अप्प-एगत्त-सूअगो**-आत्मा के एकत्व का सूचक **सुद्धो**-शुद्ध **णाणरूवो**-ज्ञान रूप **सत्तिपुंजो**-शक्ति पुंज **बुद्धो**-बुद्ध **य**-और **पणव-बीअ-पाणो**-प्रणव बीज का प्राण है।

सव्वण्हु-वायगं ससि-कंतव्व कंति-जुदं च सिद्धियरं।
झाएज्ज अणादीए, भव्वो आदि-वण्णं णिच्चं।।22।।

अन्वयार्थ-सव्वण्हु-वायगं-सर्वज्ञ का वाचक **ससि-कंतव्व**-चंद्रमा की कांति के समान **कंति-जुदं**-कांति से युक्त **च**-और **सिद्धियरं**-सिद्धि को करने वाले **अणादीए**-अनादि से **आदि-वण्णं**-आदि वर्ण का **भव्वो**-भव्य को **णिच्चं**-नित्य **झाएज्ज**-ध्यान करना चाहिए।

'आ'-गारो सत्ति-बुद्धि-वायगो सारस्सद-बीअ-जणगो।
जस-धणासा-पूरगो, माया-बीय-जुदो अव्वयो।।23।

अन्वयार्थ-आगारो-'आ' कार **सत्ति-बुद्धि-वायगो**-शक्ति व बुद्धि का वाचक **सारस्सद-बीअ-जणगो**-सारस्वत बीज का जनक **माया-बीय-जुदो**-माया बीज से युक्त **जस-धणासा-पूरगो**-यश, धन व आशा का पूरक (और) **अव्वयो**-अव्यय है।

विस्सीसो सेदवण्ण-रओ समत्थो य सव्व-कज्जेसुं।
बे-लहु-सत्ति-संजुदो, विसेस-सत्ति-जुत्तो झेयो।।24।।

अन्वयार्थ-विस्सीसो-विश्व का ईश्वर **सेदवण्ण-रओ**-श्वेत वर्ण वाला **सव्व-कज्जेसुं**-सभी कार्यों में **समत्थो**-समर्थ **बे-लहु-सत्ति-संजुदो**-दो लघु शक्तियों से संयुक्त **य**-और **विसेस-सत्ति-जुत्तो**-विशेष शक्ति से युक्त (आकार) **झेयो**-ध्याने योग्य है।

'इ'-गार-लच्छिदायगो, मिदु-कज्ज-साहगग्गि-बीय-जणगो।
परुस-कम्म-बाहगो हु, विणयमूलो लज्जाजुदो य।।25।।

अन्वयार्थ-इगारो-'इ' कार **हु**-निश्चय से **लच्छिदायगो**-लक्ष्मी दायक **मिदु-कज्ज-साहगो**-कोमल कार्यों का साधक **अग्गि-बीय-जणगो**-अग्नि बीज का जनक **परुस-कम्म-बाहगो**-कठोर कर्मों का बाधक **विणयमूलो**-विनय मूल **य**-और **लज्जाजुदो**-लज्जा से युक्त है।

रत्तवण्णमंतो तह, जवापुप्फव्वायार-संजुत्तो।
विस्सचक्खू य सुकज्ज-साहगो सया लच्छि-बीयं।।26।।

अन्वयार्थ-य-और (इकार) **जवापुप्फव्वायार-संजुत्तो**-जवा पुष्प के आकार से संयुक्त **विस्सचक्खू**-विश्वचक्षु **सया**-सदा **सुकज्ज-साहगो**-सुकार्यों में सहायक **लच्छि-बीयं**-लक्ष्मी बीज **तह**-तथा **रत्तवण्णमंतो**-रक्त वर्ण वाला माना गया है।

'ई'-गारो अप्प-सत्ति-वायगो थंभगो णाणवड्ढगो।
अमिय-बीय-मूलं सय, कज्ज-साहगो लच्छिपाणो।।27।।

अन्वयार्थ-ईगारो-'ई' कार **अप्प-सत्ति-वायगो**-अल्पशक्ति का वाचक **थंभगो**-स्तंभक **णाण वड्ढगो**-ज्ञानवर्धक **अमिय-बीय-मूलं**-अमृतबीज का मूल **कज्ज-साहगो**-कार्य साधक और **सय**-सदा **लच्छिपाणो**-लक्ष्मी का प्राण है।

'उ'-गारो उच्चाडगो, मारगो वि होदि मंति-भावेहिं।
उच्छाह-उक्किट्ठदा-हेदू अचिंत-सत्ति-जुदो य।।28।।

अन्वयार्थ-उगारो-'उ' कार **उच्चाडगो**-उच्चाटक **उच्छाह-उक्किट्ठदा-हेदू**-उत्साह उत्कृष्टता का हेतु **अचिंत-सत्ति-जुदो**-अचिंत्य शक्ति से युक्त **य**-और **मंति-भावेहिं**-मांत्रिक के भावों से **मारगो**-मारक **वि**-भी **होदि**-होता है।

'ऊ'-गारो उच्चाडग-मोहग-बीय-मूलो सत्ति-जुदो य।
कज्ज-धंसग-उवद्दव-णासगो कयाइ मारगो वि।।29।।

अन्वयार्थ-ऊगारो-'ऊ' कार **उच्चाडग-मोहग-बीय-मूलो य**-उच्चाटक व मोहक बीजों का मूल **सत्ति-जुदो**-शक्ति युक्त **कज्ज-धंसगो**-कार्य ध्वंसक-**उवद्दव-णासगो**-उपद्रव नाशक और **कयाइ**-कदाचित् **मारगो**-मारक **वि**-भी है।

'ऋ'-गारो इड्ढि-मूलो, णीलो पाणवाऊ णाणस्स तह।
विस्स-विज्जाइ बीयं, उहय-लच्छि-दायगो णियमा।।30।।

अन्वयार्थ-ऋगारो-'ऋ' कार **इड्ढि मूलो**-ऋद्धि का मूल है **णीलो**-नील वर्णी **णाणस्स**-ज्ञान की **पाणवाऊ**-प्राणवायु **विस्स-विज्जाइ**-विश्व विद्या का **बीयं**-बीज **तह**-तथा **णियमा**-नियम से **उहय-लच्छि-दायगो**-उभय लक्ष्मी का दायक है।

'ॠ'-गारो समत्थो य, पराजयिदुं सव्वलोयं किण्हो।
सुह-मणोरह-साहगो, विस्स-विज्जा-णायगो जाण।।31।।

अन्वयार्थ-किण्हो-कृष्ण वर्णी **ॠगारो**-'ॠ' कार को **सव्व-लोयं पराजयिदुं**-सर्वलोक को पराजित करने में **समत्थो**-समर्थ **सुह-**

मणोरह-साहगो-शुभ मनोरथ का साधक **य**-और **विस्स-विज्जा-णायगो**-विश्वविद्या का ज्ञायक **जाण**-जानो।

'लृ'-गारो वण्णमंतो, हेमोव्व लच्छि-वीयुप्पादगो य।
वाणि-धंसगप्प-सिद्धि-हेदू सच्च-संचारगो वि।।32।।

अन्वयार्थ-लच्छि-वीयुप्पादगो-लक्ष्मी बीज का उत्पादक **वाणि-धंसग**-वाणी का ध्वंसक **अप्प-सिद्धि-हेदू**-आत्म सिद्धि का हेतु **य**-और **सच्च-संचारगो**-सत्य का संचारक **लृगारो**-'लृ' कार **हेमोव्व वण्णमंतो**-स्वर्ण के समान वर्ण वाला **मंतो**-माना गया है।

'लृ'-गारो सव्व-कज्ज-संपादग-विसाल-काय-धारगो।
हेमवण्णरओ विस्स-दिट्ठो सव्व-विग्घ-णासगो।।33।।

अन्वयार्थ-लृगारो-'लृ' कार **विसाल-काय-धारगो**-विशाल काय धारक **सव्व-कज्ज-संपादगो**-सर्व कार्य का संपादक **हेमवण्णरओ**-हेम वर्ण वाला **विस्स-दिट्ठो**-विश्व दृष्टा **सव्व-विग्घ-णासगो**-सर्वविघ्न का नाश करने वाला है।

'ए'-गारो णिच्चलो य, पोसगो गदि-सूअग-संवड्ढगो।
अप्प-सत्ति-संचारग-अरिट्ठ-वारग-बीय-मूलो।।34।।

अन्वयार्थ-एगारो-'ए' कार **णिच्चलो**-निश्चल **पोसगो**-पोषक **गदि-सूअगो**-गति सूचक **संवड्ढगो**-संवर्द्धक **अप्प-सत्ति-संचारगो**-आत्म शक्ति का संचारक **य**-और **अरिट्ठ-वारग-बीय-मूलो**-अरिष्ट निवारक बीजों का मूल है।

'ऐ'-गारो संवड्ढग-जलवीयुप्पादग-पोसगुदत्तो।
विस्सणाणरूवमलो, सासणदेवाहवण-हेदू।।35।।

अन्वयार्थ-ऐगारो-'ऐ' कार **संवड्ढगो**-संवर्धक **जलवीयुप्पादगो**-

जल बीज का उत्पादक **पोसगो**-पोषक **उदत्तो**-उदात्त **विस्स-णाणरूवो**-विश्वज्ञान रूप **अमलो**-अमल **सासण-देवाहवण-हेदू**-शासन देवताओं के आह्वान में कारण है।

'ओ'-गारो अणुदत्तो, उदत्तो मिदु-रुक्ख-भाव-जुत्तो य।
लच्छि-सिरि-संपोसगो, माया-पणव-णिज्जर-मूलो।।36।।

अन्वयार्थ-ओगारो-'ओ' कार **अणुदत्तो**-अनुदात्त **उदत्तो**-उदात्त **मिदु-रुक्ख-भाव-जुत्तो**-मृदु, रुक्ष भाव से संयुक्त **लच्छि-सिरि-संपोसगो**-लक्ष्मी व श्री का संपोषक **य**-और **माया-पणव-णिज्जर-मूलो**-माया बीज, प्रणव बीज व निर्जरा का मूल है।

'औ'-गारो णिरवेक्खो, मुक्खो मारणुच्चाडण-बीयेसु।
सिग्घ-कज्ज-साहगो य, मूलो अणेय-बीयाणं वि।।37।।

अन्वयार्थ-औगारो-'औ' कार **णिरवेक्खो**-निरपेक्ष **मारणुच्चाडण-बीयेसु**-मारण और उच्चाटन संबंधी बीजों में **मुक्खो**-मुख्य **सिग्घ-कज्ज-साहगो**-शीघ्रकार्य का साधक **य**-और **अणेय-बीयाणं वि**-अनेक बीजों का भी **मूलो**-मूल है।

अणुस्सारो संपुण्ण-सत्ति-दायगो तारग-वण्णो तह।
मुक्खो कम्मक्खयिदुं, उग्घाडगो मिदु-सत्तीए।।38।।

अन्वयार्थ-अणुस्सारो-अनुस्वार **संपुण्ण-सत्ति-दायगो**-सम्पूर्ण शक्ति का दायक **तारग-वण्णो**-तारका वर्ण वाला **कम्मक्खयिदुं**-कर्मक्षय करने में **मुक्खो**-मुख्य **तह**-तथा **मिदु-सत्तीए**-मृदु शक्तियों का **उग्घाडगो**-उद्घाटक है।

'अ':-गारो फडिगोव्व य, वण्णरओ संति-बीयेसु पमुहो।
णिरवेक्खावत्थाए, कज्जासाहगिट्ठ-सिद्धिदो।।39।।

अन्वयार्थ-अःगारो-'अ':कार **फडिगोव्व**-स्फटिक के समान **वण्णरओ**-वर्ण वाला **संति-बीयेसु**-शांति बीजों में **पमुहो**-प्रमुख **णिरवेक्खावत्थाए**-निरपेक्ष अवस्था में **कज्जासाहगो**-कार्य असाधक **य**-और **इट्ठ-सिद्धिदो**-इष्ट सिद्धि दायक है।

'क'-गारो पहावजुदो, पोम्मरायोव्व वण्णरओ सुहदो।
परमप्पवीयं वंस-वड्ढगो कामरूवो तहा।।40।।

अन्वयार्थ-कगारो-'क' कार **पहावजुदो**-प्रभाव युक्त **पोम्मरायोव्व**-पद्मराग मणि के समान **वण्णरओ**-वर्ण वाला **सुहदो**-सुख देने वाला **परमप्पवीयं**-परमात्मा का बीज **वंस-वड्ढगो**-वंशवर्द्धक **तहा**-तथा **कामरूवो**-कामरूप है।

'ख'-गारो गगण-बीयं, णीलो जिणराजाधिरायो तहा।
अभाव-कज्ज-सिद्धीइ, कप्परुक्खुच्चाडण-जणगो।।41।।

अन्वयार्थ-खगारो-'ख' कार **गगण-बीयं**-आकाश बीज **णीलो**-नीलवर्णी **जिणराजाधिरायो**-जिनराजा का अधिपति है (अर्थात् इसका ध्यान करने वाला कर्मशत्रुओं को जीत लेता है) **अभाव-कज्ज-सिद्धीइ**-अभाव कार्यों की सिद्धि के लिए **कप्परुक्खो**-कल्पवृक्ष **उच्चाडण-जणगो**-उच्चाटन बीजों का जनक है।

'ग'-गारो पणवमाया-जुद-साहगो तह परम-पुरिसत्थी।
हरी कज्ज-साहगो य, सरल-सहजप्पविसुद्धीए।।42।।

अन्वयार्थ-गगारो-'ग' कार **पणवमाया-जुद-साहगो य**-प्रणव और माया बीज से युक्त सहायक **परम-पुरिसत्थी**-परम पुरुषार्थी **हरी**-हरित वर्णी **कज्ज-साहगो**-कार्य साधक **तह**-तथा **सरल-सहजप्पविसुद्धीए**-आत्मविशुद्धि के लिए सरल-सहज है।

'घ'-गार-विग्घणासगो, थंभग-बीयं सुवण्णवण्णरओ।
दुल्लहो वीयक्खरो, मारण-मोहग-बीय-जणगो।।43।।

अन्वयार्थ-घगार-'घ' कार **विग्घणासगो**-विघ्ननाशक **थंभग-बीयं**-स्तम्भक बीज **सुवण्णवण्णरओ**-सोने के समान वर्ण वाला **दुल्लहो** दुर्लभ **वीयक्खरो**-बीजाक्षर **मारण-मोहग-बीय-जणगो**-मारण और मोहक बीजों का जनक है।

'ङ'-गारो पुण्णिंणदुव्व, धवलो तहा धंसग-बीय-जणगो।
सर-मादुगा-बीयेहि, फलुप्पादगो अरि-धंसगो।।44।।

अन्वयार्थ-ङगारो-'ङ' कार **पुण्णिंणदुव्व**-पूर्ण चंद्रमा के समान **धवलो**-धवल वर्णी **धंसग-बीय-जणगो**-ध्वंसक बीजों का जनक **सर-मादुगा-बीयेहि**-स्वर, मातृका बीजों के द्वारा **फलुप्पादगो**-फलोत्पादक **तहा**-तथा **अरि-धंसगो**-शत्रु का विध्वंसक है।

'च'-गारो य उच्चाडण-वीयाण जणगो रजद-वण्णरओ।
खंड-सत्ति-पदीगो वि, वियलंगोव्व मंत-बीयेसु।।45।।

अन्वयार्थ-चगारो-'च' कार **वि**-भी **रजद-वण्णरओ**-रजत वर्णी **उच्चाडण-वीयाण**-उच्चाटन बीजों का **जणगो**-जनक **खंड-सत्ति-पदीगो**-खंडशक्ति का प्रतीक **य**-और **मंत-बीयेसु**-मंत्र बीजों में **वियलंगोव्व**-विकलांग के समान है।

'छ'-गार-बंध-कारगो, हरी सुकज्जसाहगामियरूवो।
छाया-माया-सूअगो, सत्ति-धंसगप्पबीय-पिदू।।46।।

अन्वयार्थ-छगारो-'छ' कार **बंध-कारगो**-बंधकारक **हरी**-हरित वर्णी **सुकज्जसाहगो**-सुकार्यों का साधक **अमियरूवो**-अमृत रूप **छाया-माया-सूअगो**-छाया-माया का सूचक **सत्ति-धंसगो**-शक्ति

का ध्वंसक **अप्पबीय-पिदू**-आत्म बीज का पिता (जनक) है।

'ज'-गारो जयकारगो, सत्ति-वड्ढगो णविअ-कज्ज-हेदू।
आहि-वाहि-समणो खलु, आगरिसग-बीय-जणगो तह।।47।।

अन्वयार्थ-जगारो-'ज' कार **खलु**-निश्चय से **जयकारगो**-जय कारक **सत्ति-वड्ढगो**-शक्ति वर्द्धक **णविअ-कज्ज-हेदू**-नवीन कार्य का हेतु **आहि-वाहि-समणो**-आधि-व्याधि का शामक **तह**-तथा **आगरिसग-बीय-जणगो** -आकर्षक बीजों का जनक है।

'झ'-गारो कूड-मूलो, आहि-वाहि-णासगो सिरि-कारगो।
सत्ति-संचारगो तह, रेफ -जुदे कज्ज-साहगो वि।।48।।

अन्वयार्थ-झगारो-'झ' कार **कूड-मूलो**-कूट का मूल **आहि-वाहि-णासगो**-आधि-व्याधि नाशक **सिरि-कारगो**-श्री कारक **सत्ति-संचारगो**-शक्ति का संचारक **तह**-तथा **रेफ-जुदे**-रेफ युक्त होने पर **कज्ज-साहगो**-कार्य साधक **वि**-भी है।

'ञ'-गार-कज्ज-साहगो, जणगो थंभग-मोहग-बीयाणं।
चंपाव्व वण्णमंतो, तहावरोहगो साहणस्स।।49।।

अन्वयार्थ-ञगारो-'ञ' कार **कज्ज-साहगो**-कार्य का साधक **थंभग-मोहग-बीयाणं**-स्तंभक, मोहक बीजों का **जणगो**-जनक **साहणस्स**-साधन का **अवरोहगो**-अवरोधक **तहा**-तथा **चंपाव्व**-चंपा पुष्प के समान **वण्णमंतो**-वर्ण वाला माना गया है।

'ट'-गारो हिमिव-धवलो, अग्गि-बीय-मणिट्ठ-कज्ज-साहगो।
अग्गिच्च-कज्जाणं च, पसारगो णित्थारगो सय।।50।।

अन्वयार्थ-टगारो-'ट'-कार **हिमिव-धवलो**-बर्फ के समान धवल

अग्गि-बीयं-अग्नि बीज **सय**-सदा **अणिट्ठ-कज्ज-साहगो**-अनिष्ट कार्यों का साधक **अग्गिच्च-कज्जाणं**-आग्नेय कार्यों का **पसारगो**-प्रसारक **च**-और **णित्थारगो**-निस्तारक है।

'ठ'-गारो सुब्भो य मिदु-कज्ज-णासगो साहगो किट्ठाण।
तामसासंति-हेदू, तहा थंभगो अग्गि-बीयं।।51।।

अन्वयार्थ-ठगारो-'ठ' कार **सुब्भो**-शुभ्रवर्णी **मिदु-कज्ज-णासगो**-मृदु कार्यों का नाशक **च**-और **किट्ठाण-साहगो**-क्लिष्ट कार्यों का साधक है **तामस**-तामसिक **असंति-हेदू**-अशांति का हेतु **थंभगो**-स्तंभक **तहा**-तथा **अग्गि-बीयं**-अग्निबीज है।

'ड'-गारो सासणदेव-सत्ति-फोडगो सुवण्णवण्णरओ।
जहण्ण-कज्ज-सिद्धीइ, अमोहो अणिट्ठ-रूवो तह।।52।।

अन्वयार्थ-डगारो-'ड' कार **सासणदेव-सत्ति-फोडगो**-शासन देवताओं की शक्ति का स्फोटक **सुवण्णवण्णरओ**-सोने के समान वर्ण वाला **जहण्ण-कज्ज-सिद्धीइ**-जघन्य कार्यों की सिद्धि के लिए **अमोहो**-अमोघ **तह**-तथा **अणिट्ठ-रूवो**-अनिष्ट रूप है।

'ढ'-गारो रुद्द-रूवो, माया-जणगो य णिच्छलो धवलो।
तामस-सत्ति-वड्ढगो, पहाणो मारण-बीयेसुं।।53।।

अन्वयार्थ-ढगारो-'ढ' कार **रुद्द-रूवो**-रौद्र रूप **माया-जणगो**-माया बीज का जनक **णिच्छलो**-निश्छल **धवलो**-धवल वर्णी **तामस-सत्ति-वड्ढगो**-तामसिक शक्तियों का वर्धक **य**-और **मारण-बीयेसुं**-मारण बीजों में **पहाणो**-प्रधान है।

'ण'-गार-संति-पदीगं, सत्ति-फोडग-धंसग-बीय-जणगो।
णह-बीयेसु पहाणो, दुक्कम्म-दाहगो अग्गीव।।54।।

अन्वयार्थ-णगारो-'ण' कार **संति-पदीगं**-शांति का प्रतीक **सत्ति-फोडगो**-शक्ति का स्फोटक **धंसग-बीय-जणगो**-ध्वंसक बीज का जनक **णह-बीयेसु**-आकाश बीजों में **पहाणो**-प्रधान (और) **अग्गीव**-अग्नि के समान **दुक्कम्म-दाहगो**-दुष्कर्मों का दाहक है।

आगरिसगो 'त'-गारो, सत्ति-उप्पादगो कज्ज-साहगो।
सव्व-सिद्धि-पदायगो, सह सारस्सद-बीयेणं च।।55।।

अन्वयार्थ-तगारो-'त' कार **आगरिसगो**-आकर्षक बीज है **सत्ति-उप्पादगो**-शक्ति का उत्पादक **कज्ज-साहगो**-कार्य साधक **च**-और **सारस्सद-बीयेणं**-सारस्वत बीज के **सह**-साथ **सव्व-सिद्धि-पदायगो**-सर्व सिद्धि प्रदायक है।

'थ'-गारो सुह-साहगो, सर-मादुगा-जुद-मोहगो धवलो।
लच्छि-बीयस्स मित्तं, सव्व-वावी थंभगो जाण।।56।।

अन्वयार्थ-थगारो-'थ' कार को **सुह-साहगो**-शुभ साधक **सर-मादुगा-जुद-मोहगो**-स्वरमातृका से युक्त मोहक **धवलो**-धवल **लच्छि-बीयस्स**-लक्ष्मी बीज का **मित्तं**-मित्र **सव्व-वावी**-सर्वव्यापी **थंभगो**-स्तंभक **जाण**-जानो।

'द'-गार-संति-कारगो, अप्पसत्ति-उप्पादगो वड्ढगो।
कम्म-खयिदुं पहाणो, वसीकरण-बीय-जणगो तह।।57।।

अन्वयार्थ-दगारो-'द' कार **संति-कारगो**-शांति कारक **अप्पसत्ति-उप्पादगो-वड्ढगो**-आत्म शक्ति का उत्पादक व वर्द्धक **कम्म-खयिदुं**-कर्म क्षय के लिए **पहाणो**-प्रधान **तह**-तथा **वसीकरण-बीय-जणगो**-वशीकरण बीजों का जनक है।

'ध'-गारो भयणासगो, माया-बीय-जणगो दोस-रहिदो।
बुहोव्व पइडि-जुत्तो य, सहायी मित्तं व हिदेसी।।58।।

अन्वयार्थ-धगारो-'ध' कार **भयणासगो**-भयनाशक **माया-बीय-जणगो**-माया बीज का जनक **दोस-रहिदो**-दोष रहित **बुहोव्व**-बुध के समान **पइडि-जुत्तो**-प्रकृति से युक्त **सहायी**-सहायक **य**-और **मित्तं व-हिदेसी**-मित्र के समान हितैषी है।

'न'-गारो य अप्पसिद्धि-कारगो साहगो मिदु-कज्जाणं।
अप्पणियंतगो विग्घ-णासगो जल-तच्च-पहाणो।।59।।

अन्वयार्थ-नगारो-'न' कार **अप्पसिद्धि-कारगो**-आत्म सिद्धि कारक **मिदु-कज्जाणं**-मृदु कार्यों का **साहगो**-साधक **अप्पणियंतगो**-आत्म नियंत्रक **विग्घ-णासगो**-विघ्न नाशक **य**-और **जल-तच्च-पहाणो**-जल तत्त्व प्रधान है।

'प'-गार-पित्त-णासगो, सव्व-कज्ज-सिद्धीए गहणीयो।
परमप्पदंसगो जल-बीयं सिदपोम्मोव्व धवलो।।60।।

अन्वयार्थ-पगारो-'प' कार **पित्त-णासगो**-पित्त नाशक **सव्व-कज्ज-सिद्धीए**-सर्व कार्यों की सिद्धि के लिए **गहणीयो**-ग्राह्य **परमप्पदंसगो**-परमात्मा का दर्शक **जल-बीयं**-जल बीज (तथा) **सिदपोम्मोव्व**-श्वेत पद्म के समान **धवलो**-धवल है।

'फ'-गारो विसिट्ठ-कज्ज-साहगो फड-झुणि-जुदुच्चाडगो य।
सिवाहिवदी अस्स जल-वाउ-तच्च-जुदो मारगो वि।।61।।

अन्वयार्थ-फगारो-'फ' कार **विसिट्ठ-कज्ज-साहगो**-विशिष्ट कार्यों का साधक **फड-झुणि-जुदुच्चाडगो**-फट् की ध्वनि से युक्त होने

पर उच्चाटक **जल-वाउ-तच्च-जुदो**-जल और वायु तत्त्व युक्त **मारगो वि**-मारक भी है **य**-और **अस्स**-इसके **अहिवदी**-अधिपति **सिवो**-शिव हैं।

'ब'-गारो इंदधणुव्व, वण्णमंतुसहदेवहिवदी अस्स।
सव्व-सिद्धि-दायगो य, विग्घ-धंसगणुस्सार-जुदो।।62।।

अन्वयार्थ-बगारो-'ब' कार **सव्व-सिद्धि-दायगो**-सर्वसिद्धि दायक **अणुस्सार-जुदो**-अनुस्वार युक्त होने पर **विग्घ-धंसगो**-विघ्नों का ध्वंसक **य**-और **इंदधणुव्व**-इंद्रधनुष के समान **वण्णमंतो**-वर्ण वाला माना गया है **अस्स**-इसके **अहिवदी**-अधिपति **उसहदेवो**-वृषभदेव हैं।

'भ'-गार-विग्घदायगो, मारणुच्चाडण-कज्ज-साहगो य।
तंबिरो अहिणायगो, असुरो कल्लाण-धंसगो हु।।63।।

अन्वयार्थ-हु-निश्चय से **भगारो**-'भ' कार **विग्घदायगो**-विघ्नदायक **मारणुच्चाडण-कज्ज-साहगो**-मारण-उच्चाटन कार्यों में सहायक **तंबिरो**-ताम्रवर्णी **असुरो**-असुर का **अहिणायगो**-अधिनायक **य**-और **कल्लाण-धंसगो**-कल्याण का ध्वंसक है।

'म'-गार-सिद्धिदायगो, उहय-कज्ज-साहग-उत्तमसुहदो।
संति-चित्त-विगासगो, वंस-वड्ढगो झाण-मूलो।।64।।

अन्वयार्थ-मगारो-'म' कार **सिद्धिदायगो**-सिद्धि दायक **उहय-कज्ज-साहगो**-उभय कार्य साधक **उत्तमसुहदो**-उत्तम सुख को देने वाला **संति-चित्त-विगासगो**-शांति चित्त विकासक **वंस-वड्ढगो**-वंश वर्द्धक और **झाण-मूलो**-ध्यान का मूल है।

'य'-गार-संतिसाहगो, सत्तिग-साहणा-सिद्धि-कारगो य।
इट्ठ-वत्थूण हेदू, वर-कज्ज-साहगो झाणस्स।।65।।

अन्वयार्थ-यगारो-'य' कार **संतिसाहगो**-शांति का साधक **सत्तिग-साहणा-सिद्धि-कारगो**-सात्त्विक साधना की सिद्धि का कारक **इट्ठ-वत्थूण**-इष्ट वस्तुओं का **हेदू**-हेतु **झाणस्स**-ध्यान **य**-और **वर-कज्ज-साहगो**-उत्तम कार्य का साधक है।

'र'-गारो अग्गिबीयं, कज्ज-साहगो सत्तु-णिवारगो य।
पहाण-बीय-जणगो हु, सत्ति-फोडगो संवड्ढगो।।66।।

अन्वयार्थ-रगारो-'र' कार **हु**-निश्चय से **अग्गिबीयं**-अग्नि बीज **कज्ज-साहगो**-कार्य साधक **सत्तु-णिवारगो**-शत्रु निवारक **पहाण-बीय-जणगो**-प्रधान बीजों का जनक **सत्ति-फोडगो**-शक्ति का स्फोटक **य**-और **संवड्ढगो**-संवर्द्धक है।

'ल'-गारो मोह-समणो, सेय-णिमित्तं लच्छि-कारगो तह।
दिव्व-रूव-पदायगो, पहुत्त-सुह-सत्ति-पदायगो।।67।।

अन्वयार्थ-लगारो-'ल' कार **मोह-समणो**-मोह का शमन करने वाला **सेय-णिमित्तं**-कल्याण का निमित्त **लच्छि-कारगो**-लक्ष्मी कारक **दिव्व-रूव-पदायगो**-दिव्य रूप प्रदायक **पहुत्त-सुह-सत्ति-पदायगो तह**-प्रभुत्व, सुख तथा शक्ति का प्रदायक है।

'व'-गारो सिद्धि-जणगो, आगरिसगो अदिसय-कूड-जुत्तो।
सारस्सद-बीयं तह, सव्व-भय-उवद्दव-णासगो।।68।।

मंगल-साहगो आहि-वाहि-हणगो सव्व-सिद्धि-कारगो।
थंभगो धम्म-बीयं, दुक्ख-विग्घ-विणासगो तहा।।69।।

अन्वयार्थ-वगारो-'व' कार **सिद्धि-जणगो**-सिद्धि का जनक **आगरिसगो**-आकर्षक **अदिसय-कूड-जुत्तो तह**-अतिशय तथा कूट से युक्त **सारस्सद-बीयं**-सारस्वत बीज **सव्व-भय-उवद्दव-णासगो**-सर्व भय उपद्रव नाशक **मंगल-साहगो**-मंगल साधक **आहि-वाहि-हणगो**-आधि-व्याधि का हनन करने वाला **सव्व-सिद्धि-कारगो**-सर्व सिद्धि कारक **थंभगो**-स्तंभक **धम्म-बीयं**-धर्म बीज **दुक्ख-विग्घ-विणासगो तहा**-दु:ख तथा विघ्न का विनाशक है।

'श'-गारो उवेक्खणीय-सहाव-जुदो मंतकज्जेसु अस्स।
णिगलप्पाहिणायगो, णील-संति-पोसग-णिरत्थो।।70।।

अन्वयार्थ-शगारो-'श' कार **मंतकज्जेसु**-मंत्रकार्यों में **उवेक्खणीय-सहाव-जुदो**-उपेक्षणीय स्वभाव से युक्त **णीलो**-नीलवर्णी **संति-पोसगो**-शांति का पोषक **णिरत्थो**-निरर्थक है **अस्स**-इसके **अहिणायगो**-अधिनायक **णिगलप्पा**-निकल आत्मा हैं।

'ष'-गाराहावण-रुद्द-बीय-जणगो अग्गि-जल-थंभगो य।
भयकर-वीभच्छ-कज्ज-साहगो बहुवण्णमंतो वि।।71।।

अन्वयार्थ-षगारो-'ष'-कार **आहावण-रुद्द-बीय-जणगो य**-आह्वान और रुद्र बीजों का जनक **अग्गि-जल-थंभगो**-अग्नि-जल स्तंभक **भयकर-वीभच्छ-कज्ज-साहगो वि**-भयंकर और वीभत्स कार्यों का भी साधक **बहुवण्णमंतो**-बहुत वर्ण वाला माना गया है।

'स'-गार-संति-दायगो, तुट्ठि-पुट्ठि-बीय-मंतेसु मुक्खो।
उहय-लच्छि-कारगो य, कम्म-णासगो अप्प-दिट्ठो।।72।।

अन्वयार्थ-सगारो-'स' कार **संति-दायगो**-शांति दायक **तुट्ठि-पुट्ठि-बीय-मंतेसु**-तुष्टि-पुष्टि बीज मंत्रों में **मुक्खो**-मुख्य **उहय-लच्छि-**

कारगो-उभय लक्ष्मी कारक **कम्म-णासगो**-कर्म नाशक **य**-और **अप्प-दिट्ठो**-आत्म दृष्टा है।

'ह'-गारो कूडक्खरो, कम्म-णासगो मंगलप्पदीगं।
सव्व-बीय-जणगो णह-तच्च-जुत्तो वंस-वड्ढगो।।73।।

अन्वयार्थ-हगारो-'ह' कार **कूडक्खरो**-कूट अक्षर **कम्म-णासगो**-कर्म नाशक **मंगलप्पदीगं**-मंगल का प्रतीक **सव्व-बीय-जणगो**-सर्व बीजों का जनक **णह-तच्च-जुत्तो**-आकाश तत्त्व से युक्त और **वंस-वड्ढगो**-वंश वर्द्धक है।

वर्ण माहात्म्य

मूलवण्णं विणा णो, संभवो सद्द-पय-छंद-रयणा।
मूलवण्णो सूह-हेदू, सग-भाव-पगासणा-हेदू।।74।।

अन्वयार्थ-मूलवण्णं-मूलवर्ण के **विणा**-बिना **सद्द-पय-छंद-रयणा**-शब्द, पद व छंद की रचना **संभवो**-संभव **णो**-नहीं है **मूलवण्णो**-मूलवर्ण **सुह-हेदू**-सुख का हेतु है व **सग-भाव-पगासणा-हेदू**-स्वभाव प्रकटीकरण का हेतु है।

प्राकृत भाषा

पागिद-भासा णेया, सव्वप्पिया रिउ-मिदु-मणरंजगा।
विसिट्ठक्खर-पजुत्ता, कइवय-अक्खर-विहीणा तह।।75।।

अन्वयार्थ-पागिद-भासा-प्राकृत भाषा **सव्वप्पिया**-सर्वप्रिय **रिउ-मिदु-मणरंजगा**-ऋजु, मृदु व मनोरंजक **णेया**-जानना चाहिए (वह) **विसिट्ठक्खर-पजुत्ता**-विशिष्ट अक्षरों से प्रयुक्त **तह**-तथा **कइवय-अक्खर-विहीणा**-कई अक्षरों से विहीन है।

ग्रंथकार की लघुता

अस्सिं गंथे जे जे, गुणा दिस्संति भव्वा ते सव्वा।
गुरुप्पसादो दोसो, मम पमादस्स फलं जाणह।।76।।

अन्वयार्थ-**भव्वा**-भव्यों को **अस्सिं**-इस **गंथे**-ग्रंथ में **जे जे**-जो-जो **गुणा**-गुण **दिस्संति**-दिखाई देते हैं **ते**-वे **सव्वा**-सभी **गुरुप्पसादो**-गुरु का प्रसाद (और) **दोसो**-जो दोष हैं (वो सब) **मम**-मेरे **पमादस्स**-प्रमाद का **फलं**-फल **जाणह**-जानो।

सयल-संजमी झाणी, मुणी सोहित्तु पढंतु गंथमिणं।
मम दोसाणं णिच्चं, खमंतु मे सव्व-विण्णाणी।।77।।

अन्वयार्थ-**सव्व-विण्णाणी**-सर्व विज्ञानी **सयल-संजमी**-सकल संयमी **झाणी**-ध्यानी **मुणी**-मुनि **इणं**-इस **गंथं**-ग्रंथ को **सोहित्तु**-सोधनकर **पढंतु**-पढ़ें (और) **मम**-मेरे **दोसाणं**-दोषों के लिए **णिच्चं**-नित्य **मे**-मुझे **खमंतु**-क्षमा करें।

अंतिम मंगलाचारण

धम्म-वड्ढगोव्व-सूरि-मस्सिं काले-चरिय-चक्कवट्टिं।
संतिसायर-तवस्सिं, महाणाणिं पणिवयामि सय।।78।।

अन्वयार्थ-**अस्सिं**-इस **काले**-काल में **धम्म-वड्ढगोव्व**-धर्म प्रवर्तक के समान **महाणाणिं**-महाज्ञानी **तवस्सिं**-तपस्वी **चरिय-चक्कवट्टिं**-चारित्र चक्रवर्ती **सूरिं**-आचार्य श्री **संतिसायरं**-शांतिसागर जी को मैं (आचार्य वसुनंदी) **सय**-सदा **पणिवयामि**-नमस्कार करता हूँ।

पायसागरं सूरिं, महातवस्सि-मागम-चरिया-जुदं।
सहज-सरल-जगपुज्जं, णिस्सेयरूव-मोणंदामि।।79।।

अन्वयार्थ-आगम-चरिया-जुदं-आगम चर्या से युक्त **सहज-सरल-जगपुज्जं**-सहज, सरल, जगद्पूज्य **णिस्सेयरूवं**-नि:श्रेयस रूप **महातवस्सिं**-महातपस्वी **सूरिं**-आचार्य श्री **पायसायरं**-पायसागर जी महाराज का **ओणंदामि**-अभिनंदन करता हूँ।

अज्झप्प-महाजोगिं, णिरामगंधं अणुद्धयं सूरिं।
विज्जंत-कित्ती जस्स, देसे जयकित्तिं पणमामि।।80।।

अन्वयार्थ-णिरामगंधं-निर्दोष चारित्र वाले **अणुद्धयं**-भद्र **देसे**-देश में **जस्स**-जिनकी **विज्जंत-कित्ती**-कीर्ति विद्यमान है (ऐसे) **अज्झप्प-महाजोगिं**-अध्यात्म महायोगि **सूरिं**-आचार्य श्री **जयकित्तिं**-जयकीर्ति जी महाराज को **पणमामि**-प्रणाम करता हूँ।

भारह-गोरवं सया, महाणिद्देसग-सूरिं देसस्स।
देसभूसणं णाणिं, तिभत्तीए णमंसामि हं।।81।।

अन्वयार्थ-देसस्स-देश के **महाणिद्देसगं**-महान् निर्देशक **णाणिं**-ज्ञानी **भारह-गोरवं**-भारत गौरव **सूरिं**-आचार्य श्री **देसभूसणं**-देशभूषण जी महाराज को **हं**-मैं (आचार्य वसुनंदी मुनि) **सया**-सदा **तिभत्तीए**-त्रिभक्ति से **णमंसामि**-नमस्कार करता हूँ।

सिद्धंत-चक्कवट्टिं, सण्णाण-महोवहिं रट्ठ-संतं।
सिद-पिच्छ-धारग-गुरुं, सूरि-विज्जाणंदं णमामि।।82।।

अन्वयार्थ-सण्णाण-महोवहिं-सद्ज्ञान के महोदधि **सिद्धंत-चक्कवट्टिं**-सिद्धांत चक्रवर्ती **रट्ठ-संतं**-राष्ट्रसंत **सिद-पिच्छ-धारगं**-श्वेतपिच्छी धारक **सूरिं**-आचार्य श्री **विज्जाणंदं गुरुं**-विद्यानंद जी गुरुवर को **णमामि**-नमस्कार करता हूँ।

प्रशस्ति

परमेट्ठि-आराहणा, रसो केवलिणो तहा वीरद्धे।
सावणासिद-पणमीइ, ससिवारे गंथिमो पुण्णो।।83।।

अन्वयार्थ-परमेट्ठि-परमेष्ठी-5 **आराहणा**-आराधना-4 **रसो**-रस-5 **केवलिणो**-केवली-2 (अंकानां वामतोगति के अनुसार) **वीरद्धे**-वीराब्धे 2545 में **ससिवारे**-सोमवार **सावणासिद-पणमीइ**-श्रावण असित पंचमी को **इमो**-यह **गंथो**-ग्रंथ **पुण्णो**-पूर्ण हुआ।

जस्स सुदिट्ठि-किवाए, समत्तामिदं कज्जं गुरुस्स तस्स।
णंदणो वसुगुणं खलु, कंखंतो तं पणमेदि सय।।84।।

अन्वयार्थ-जस्स-जिसकी **सुदिट्ठि-किवाए**-सुदृष्टि कृपा से **इदं**-यह **कज्जं**-कार्य **समत्तं**-समाप्त हुआ **तस्स**-उन **गुरुस्स**-गुरू का **णंदणो**-नंदन (पुत्र) आचार्य वसुनंदी **वसुगुणं**-वसुगुण की **कंखंतो**-आकांक्षा करता हुआ **खलु**-निश्चय से **तं**-उन्हें **सय**-सदा **पणमेदि**-प्रणाम करता है।